

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

अग्रैसरिक. Dieselbe Bedeutung hat अग्र H. 938: सागराच्चाग्रं स्युनमाम्ब-  
लाम्बराः, obgleich wir hier, da die Composita सागरान्मी, सागरमेखला,  
सागराम्बरा gemeint sind, im Deutschen अग्रै durch hinten übersetzen  
müssen. So verweist अग्रै in einer Schrift auch nicht etwa auf das Vor-  
angehende, sondern auf das Folgende, noch *Bevorstehende*: एवमग्रे ऽपि  
MAHON. zu VS. 10, 9; vgl. weiter unten und u. अग्रिम. Mit dem gen.:  
vor (auf die Frage wo?) अग्रै याति रथस्य रेणुपदवीं चूर्णाभिवत्तो मेघाः  
VIKR. 4. RAGH. 2, 56. vor, in Gegenwart: राजपुत्राणामग्रे ऽब्रवीत्  
HIT. 8, 15, v. l. (für पुरस्तात्) ममाग्रे प्रस्तुवति 19, 2. तन्ममाग्रे निवेद्य  
VET. 8, 3. vor (auf die Frage wohin?): लङ्कामेकां ध्रुवो ऽग्रे नितितवती  
VET. 12, 9. zu: गत्वा वाङ्कस्याग्रे N. 23, 19. तया तस्या अग्रे गतव्यम् VET.  
9, 3. — 4) das Erste, Erstling, Anfang H. 1459. an. 2, 391. अग्रं पिबा म-  
धूनाम् RV. 4, 46, 1. आग्रिर्यमुषसामशोचि SV. I, 1, 2, 3, 8. (RV. 7, 8, 1: आ-  
ग्रिर्यं उषः). Loc. अग्रे am Anfange, zuerst: ते अग्रे ऽश्वमयुञ्जन् VS. 9, 7.  
23. भगवत्तावग्रे वदताम् KHAND. Up. 1, 8, 2. नैवेत् किं च नाग्र आसीत् BṚH.  
ĀR. Up. 1, 2, 1. आत्मैवेदमग्र आसीत् 1, 4, 1. मातुरग्रे ऽधिजननं द्वितीयं मौ-  
ञ्जिवन्धने । तृतीयं यज्ञदीक्षायां M. 2, 169. सवर्णाग्रे द्विजातीनां प्रशस्ता दा-  
रकर्मणि (KULL. fasst hier अग्रे adjectivisch auf) 3, 12. अतो ह वा अग्रे प-  
श्चेव वा इदं पञ्चालम् CAT. Br. 4, 1, 3, 5. अग्रे — ततः BṚH. ĀR. Up. 1, 4, 1.  
P. 3, 4, 24, Sch. अग्रे — अग्र BṚH. ĀR. Up. 1, 4, 1. Mit dem abl. vor: अतिथिभ्यो  
ऽग्र एवैतान्भोजयेत् M. 3, 114. Mit dem gen. nach unserer Auffassungs-  
weise: nach (vonder Zeit): जन्मनो ऽग्रे AIR. Up. 4, 3. (प्रेक्षाणाम्) अतिथ्यब-  
र्क्षिष्वत्यग्रे भविष्यति JĀG. zu KĀT. C. 8, 6, 28. — 5) das Beste in seiner Art  
AK. 3, 2, 7. H. 1438. an. 3, 292. RV. 4, 28, 6. अग्रमग्रमिदं भते वसूनाम् 1, 123, 4.  
R. 4, 61, 10. स्पन्दनाग्रेण mit dem besten der Wagen AR. 8, 29. प्रासादाग्रे:  
R. 2, 27, 9. Voranstehend: vgl. अग्रपूजा, अग्रवीर. — 6) Ueberschuss AK.  
3, 4, 185. H. an. 2, 391. साग्रं स्त्रीसकलम् 1000 Weiber und darüber R.  
6, 93, 18. साग्रकालो च रत्नसाम् 6, 13, 17. योजनानो शतं साग्रम् 5, 7, 28.  
साग्रः संवत्सरः 4, 8, 47. 9, 17. 3, 15, 27. साग्रं वर्षशतम् BRAHMA-P. in LA.  
56, 3 (Lassen trennt: सा अग्रं). साग्रं गव्यूतिशतद्वये H. 60. GORRESIO zieht  
R. 3, 13, 27. साग्रं zu मासद्वये und übersetzt *due mesi interi*, giebt dem-  
nach साग्र die Bedeutung von समय. — 7) Menge H. an. 2, 392. MED. r.  
4. — 8) Name eines Gewichts = पल ebend. — 9) = आलम्बन (ÇKDR.  
अवलम्बन) ebend. — 10) ein besonderes Almosen (भिक्षाप्रकारे) H. an.  
2, 392. vier Mundvoll Almosen H. 813, Sch. अग्रम् = ब्राह्मणभोजनम् NIL.  
zu N. 16, 3; vgl. अग्रहार.

2. अग्र adj. 1) erster MED. r. 4. — 2) bester TRIK. 3, 3, 326. MED. r. 4.  
— 3) überschüssig (अधिक) MED. r. 4. Nur diese Autoritäten bezeichnen  
अग्र entschieden auch als Adjectiv. Da wir aber अग्र bis jetzt nur MED. 4.  
(अग्रैः कुतुकुमुमैः) als Adjectiv zu fassen genöthigt sind (AR. 1, 8. ist  
mit der Calc. Ausg. अग्र्यं st. अग्रं zu lesen), möchten wir die Vermu-  
thung aussprechen, dass Composita wie अग्रकाय, अग्रनासिका, अग्र-  
हस्त u. s. w. die Lexicographen und spätern Schriftsteller bewogen  
haben अग्र als Adjectiv zu nehmen. HARIV. S. 927, ult. erscheint अग्र  
im Voc. als ein Beiname Vishṇu's.

अग्रकाय (अग्र + काय) m. Vorderkörper H. 1247.

अग्रग (अग्र + ग) m. der da voran geht, Führer: पञ्च सेनाग्रगान्कृत्वा  
R. 1, 1, 73. 5, 41, 4. 43, 7.

अग्रगण्य (अग्र + गण्य) 1) adj. zuerst, vor Andern zu achten: शमनभ-  
वनयाने यद्वानग्रगण्यः MAHĀN. im ÇKDR. — 2) m. ÇIVA, ÇIV.

अग्रगामिन् (अग्र + गामिन्) m. = अग्रग P. 8, 3, 92. सेनाग्रगामिन्: R. 5, 41, 2.  
अग्रज (अग्र + ज) 1) adj. erstgeboren: सुराणामग्रजो हि पत् R. 1, 45, 24.  
तनयमग्रजम् 2, 12, 12. 5, 36, 12. — 2) m. a) ein älterer Bruder AK. 2, 6, 8,  
48. TRIK. 3, 3, 226. H. 531. M. 3. 171. 9; 58. 114. भरताग्रजः Bharata's  
älterer Bruder R. 1, 1, 37. 2, 1, 14. लक्ष्मणाग्रजः 2, 21, 44. — b) ein Brah-  
man H. 812. — c) ein Beiname Vishṇu's HARIV. S. 927, ult. — 3) f. ऽज्ञा  
eine ältere Schwester TRIK. 3, 3, 3. — Vgl. अग्रजन्मन्, अग्रजा, अग्रजातक,  
अग्रजाति.

अग्रजङ्घा (अग्र + जङ्घा) f. Vorderseite des Schenkels H. 615.

अग्रजन्मन् (अग्र + जन्मन्) m. 1) ein älterer Bruder TRIK. 3, 3, 226. H.  
an. 4, 157. MED. n. 229. — 2) ein Brahman AK. 2, 7, 3. TRIK. 3, 3, 226. H.  
812. an. 4, 157. MED. n. 229. M. 2, 20. 3, 13. 10, 75. JĀG. 1, 62. — 3) ein  
Mann aus einer der 3 obern Kasten MED. n. 229. — Vgl. अग्रज.

अग्रजा (अग्र + जा) adj. erstgeboren: लक्ष्मणमग्रजा गोपाम् RV. 9, 5, 9.

अग्रजातक (अग्र + जातक) m. ein Brahman ÇARDAR. im ÇKDR. — Vgl.  
अग्रज.

अग्रजाति (अग्र + जाति) m. ein Brahman H. 812. — Vgl. अग्रज.

अग्रजिह्व (अग्र + जिह्वा) n. Zungenspitze VS. 25, 1.

अग्रणी (अग्र + नी) SIDDH. K. zu P. 8, 4, 14. adj. n. ऽणि anführend, der  
erste, vorzüglichste H. 1439. m. Anführer: अस्माकं यदि न स्यात्स्वमग्रणीः  
R. 5, 1, 67. Declination Vor. 3, 60.

अग्रणीति (अग्र + नीति) f. die erste Darbringung: प्र वापवः पात्यग्र-  
णीतिम् RV. 2, 11, 14.

अग्रतैस् (von अग्र) 1) adv. a) vorn, voran AK. 3, 5, 7. 3, 4, 22, (COL. 28.)  
7. H. 1529. 608. an. 7, 58. MED. avj. 83. AV. 5, 17, 14. महेन्द्रस्यापि नेत्रा-  
णां पृष्ठतः पार्श्वतो ऽग्रतः । .. सक्तं सर्वतो ऽभवत् SUND. 3, 27. गच्छाग्रतः  
ÇĀK. 24, 21. 70, 7. प्रोवाचेदं तदा वाक्यं — अग्रतःस्थितौ er sprach diese  
Rede zu den vor ihm stehenden R. 1, 4, 9. HIP. 4, 24. दृष्ट्वापि निधिमग्रतः  
(vor sich) HIT. PR. 34. RAGH. 2, 61. nach vorn, vor sich hin: अग्रतो ऽव-  
लोक्य VIKR. 59, 21. अग्रतः कर्तुं voranstellen, vorangehen lassen: सीता-  
मेवाग्रतः कृत्वा कलिन्दीं जगमुर्ददीम् R. 2, 55, 12. Uebertr. vor allem  
Andern berücksichtigen (= पुरः कर्तुः) धर्ममेवाग्रतः कृत्वा ततः संमानम-  
र्हति R. 2, 26, 30. 3, 69, 3. 5, 89, 72. — b) am Anfange, zuerst H. an. 7, 58.  
MED. avj. 83. पुरुषं ज्ञातमग्रतः RV. 10, 90, 7. VS. 31, 9. — 2) praep. vor,  
mit dem gen.: यो अग्रतो रौचनानां समुद्रादधिं जज्ञिषे AV. 4, 10, 2.  
वसिष्ठस्याग्रतः स्थित्वा VIÇV. 4, 7. R. 2, 3, 8. न गणस्याग्रतो गच्छेत् HIT.  
1, 25. R. 2, 9, 36. 16, 34. am Ende eines Comp.: कुम्भकर्णाग्रतः स्थिताः 6,  
37, 32. 58. im Beisein, vor Jm's Augen: अहं हि विषमद्यैव पीत्वा बहु  
तवाग्रतः 2, 12, 44. 14, 10. N. 24, 14. JĀG. 2, 6. vor Jmd hin: अन्नाद्यं —  
समुत्सृजेत्कुतवतामग्रतः M. 3, 244.

अग्रतःसर (अग्रतस् + सर) adj. f. ई vorangehend P. 3, 2, 18. AK. 2, 8,  
3, 40. H. 498.

अग्रदानिन् (von अग्र + दान) m. ein gefallener Brahman, der Gaben,  
die vorher (अग्रै) für Verstorbene bestimmt waren, sich aneignet: लोभी  
विप्रश्च भूदाणामग्रे दानं गृहीतवान् । ग्रहणे मृतदानानामग्रदानी बभूव सः ॥  
BRAHMAV. P. im ÇKDR.